International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(5): 96-98
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 18-10-2025
Accepted: 25-10-2025
Publish : 27-10-2025

मनीष कुमार
शोधार्थी,
अर्थशास्त्र,
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध निर्देशक
डॉ. कपिल कुमार मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर,
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

Correspondence:
मनीष कुमार
शोधार्थी,
अर्थशास्त्र,
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में स्वयं सहायता समूहों द्वारा किए जा रहे कार्यों का अध्ययन

मनीष कुमार, डॉ. कपिल कुमार मीना

सारांश

यह शोध पत्र झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में कार्यरत स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups– SHGs) की भूमिका पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य SHG द्वारा संचालित आर्थिक गतिविधियों का विश्लेषण करना एवं झारखंड राज्य सरकार के लिए ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना है।

यह शोध **द्वितीयक आँकड़ों** पर आधारित है, जो NABARD, NRLM, JSLPS तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय की रिपोर्टों से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि SHG ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आय वृद्धि, सामाजिक सशक्तिकरण, और महिला नेतृत्व को प्रोत्साहन दिया है। साथ ही, विपणन, प्रशिक्षण, एवं तकनीकी संसाधनों की कमी अब भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: ग्रामीण विकास, स्वयं सहायता समूह, झारखंड, महिला सशक्तिकरण, नीति-निर्देश, पूंजी निर्माण

1. प्रस्तावना

भारत में ग्रामीण विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और सामुदायिक भागीदारी शामिल हैं। ग्रामीण समाज की आर्थिक स्थिरता का मूल आधार स्थानीय स्तर पर संसाधनों का उपयोग एवं आत्मनिर्भर उत्पादन प्रणाली का निर्माण है।

स्वयं सहायता समूह (Self Help Group - SHG) इसी आत्मनिर्भरता का आधार हैं। ये समूह मुख्यतः महिलाओं द्वारा गठित छोटे समूह होते हैं, जो नियमित बचत करते हैं, सामूहिक निर्णय लेते हैं और लघु ऋण के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाते हैं।

झारखंड राज्य में SHG आंदोलन को नाबार्ड (NABARD) तथा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के सहयोग से विशेष गति मिली। झारखंड राज्य आजीविका प्रोत्साहन सोसाइटी (JSLPS) द्वारा SHG की गतिविधियों को प्रशिक्षण, बैंकिंग, और विपणन से जोड़ा गया।

रामगढ़ जिला इस दिशा में अग्रणी उदाहरण है जहाँ हजारों महिलाओं ने SHG के माध्यम से डेयरी, कृषि उत्पाद प्रसंस्करण, पापड़ निर्माण, बुनाई, और सिलाई जैसे लघु उद्योग प्रारंभ किए हैं। इससे परिवार की आय बढ़ी है और स्थानीय अर्थव्यवस्था में पूंजी संचय हुआ है।

2. अध्ययन का क्षेत्र (रामगढ़ जिला)

रामगढ़ जिला झारखंड राज्य का औद्योगिक और खनन क्षेत्र होने के साथ-साथ कृषि उत्पादन का केंद्र भी है।

क्रमांक	प्रखंड का नाम	प्रमुख गतिविधि	सक्रिय SHG की संख्या (2023)	महिला सदस्य
1	चित्रपुर	डेयरी, हस्तशिल्प	420	5,200
2	दुलमी	कृषि, सब्जी उत्पादन	310	3,900
3	गोला	पापड़, अगरबत्ती, अचार	540	6,700
4	रामगढ़	सेवा क्षेत्र, कपड़ा उद्योग	610	7,400
5	मंडू	हस्तनिर्मित वस्त्र, हस्तशिल्प	380	4,500
6	पतरातू	मधुमक्खी पालन, डेयरी	510	6,200

विश्लेषण:

रामगढ़ जिले में कुल 2,770 सक्रिय SHG समूह हैं जिनसे लगभग 33,900 महिलाएँ जुड़ी हैं। SHG के कार्य मुख्यतः कृषि सहायक उद्योगों, पशुपालन, डेयरी उत्पाद, और घरेलू निर्माण कार्यों पर केंद्रित हैं। इससे महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में ठोस सुधार हुआ है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. रामगढ़ जिले में स्वयं सहायता समूहों द्वारा किए जा रहे कार्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
2. SHG के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आय, बचत और रोजगार में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. SHG द्वारा ग्रामीण पूंजी निर्माण में किए गए योगदान का मूल्यांकन करना।
4. झारखंड राज्य सरकार के लिए ग्रामीण आर्थिक विकास हेतु आवश्यक नीति-निर्देश प्रस्तुत करना।

4. शोध की पद्धति

यह अध्ययन **केवल द्वितीयक आँकड़ों** पर आधारित है। प्राथमिक डेटा का उपयोग नहीं किया गया।

डेटा स्रोत:

- NABARD (2022-2024): *Status of Microfinance in India*
- JSLPS (2023): *Annual Report*
- ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार (2023): *NRLM Annual Report*
- झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण (2022-23)
- संबंधित शोध आलेख और जर्नल

पद्धति:

वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई। डेटा का तालिकाबद्ध और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

5. साहित्य समीक्षा

1. **डॉ. सीमा वर्मा (2018)** – SHG ने ग्रामीण महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक भागीदारी को सुदृढ़ किया।
2. **कुमार, संजय (2019)** – SHG के माध्यम से परिवार की आय में 30% तक वृद्धि देखी गई।
3. **सिंह, मनीष (2020)** – झारखंड में SHG के तहत 60% महिलाएँ स्वयं-रोजगार में संलग्न हुईं।
4. **झा, रीना (2021)** – SHG की बचत प्रणाली ने वित्तीय साक्षरता में सुधार किया।
5. **कौशल, अमृता (2021)** – SHG ने महिलाओं में सामाजिक आत्मविश्वास और राजनीतिक भागीदारी को बल दिया।
6. **सिंह, राकेश (2022)** – SHG ने ग्रामीण पूंजी निर्माण में 40% वृद्धि की, विशेषकर डेयरी क्षेत्र में।
7. **झारखंड राज्य आजीविका प्रोत्साहन सोसाइटी (JSLPS, 2022)**– जिलेवार रिपोर्ट के अनुसार रामगढ़ में SHG प्रदर्शन सर्वाधिक रहा।
8. **नाबार्ड (2023)** – सूक्ष्म वित्त योजना के अंतर्गत झारखंड राज्य में ₹1850 करोड़ की बचत पूंजी संचित की गई।
9. **सोनाली मिश्रा (2023)** – SHG ने महिला रोजगार के साथ-साथ ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा दिया।
10. **ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD, 2023)** – NRLM के तहत SHG के माध्यम से 75 लाख परिवार गरीबी रेखा से ऊपर आए।

विश्लेषण:

उपरोक्त अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि SHG ग्रामीण समाज में आत्मनिर्भरता और सामाजिक परिवर्तन की धुरी हैं। इनसे न केवल आर्थिक आय में वृद्धि हुई है बल्कि निर्णय क्षमता और सामूहिक सहयोग की भावना भी विकसित हुई है।

5. SHG द्वारा की जा रही प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ

क्रमांक	प्रमुख कार्य	SHG की संख्या	औसत वार्षिक आय (₹)
1	डेयरी एवं पशुपालन	580	2,40,000
2	हस्तशिल्प एवं बुनाई	420	1,80,000
3	पापड़, अगरबत्ती निर्माण	390	1,50,000
4	कृषि उत्पाद प्रसंस्करण	460	2,10,000
5	किराना एवं खुदरा व्यापार	320	1,30,000
6	मधुमक्खी पालन एवं जैविक खेती	300	1,70,000

विश्लेषण:

रामगढ़ जिले के SHG समूहों ने विविध आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम उठाए हैं। इनमें डेयरी एवं कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र सबसे अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ है।

7. सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण

प्रभाव का क्षेत्र	प्रभाव का स्तर	विवरण
आर्थिक स्थिति	उच्च	महिलाओं की औसत आय में 35% वृद्धि
सामाजिक स्थिति	उच्च	सम्मान एवं परिवार में निर्णय क्षमता बढ़ी
शिक्षा एवं जागरूकता	मध्यम	बैंकिंग ज्ञान और साक्षरता में सुधार
नेतृत्व क्षमता	उच्च	महिलाएँ पंचायत प्रतिनिधि बनीं
सामुदायिक सहयोग	उच्च	समूह आधारित कार्यसंस्कृति विकसित

विश्लेषण:

SHG ने आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ सामाजिक पुनरुत्थान को भी बढ़ावा दिया है। अब महिलाएँ सामूहिक निर्णय लेने और नेतृत्व में सक्रिय हैं।

8. प्रमुख चुनौतियाँ

1. विपणन समस्या: SHG उत्पादों के लिए स्थायी बाजार का अभाव है।
2. तकनीकी प्रशिक्षण की कमी: उत्पादकता और गुणवत्ता प्रभावित होती है।
3. वित्तीय जटिलताएँ: बैंक ऋण वितरण प्रक्रिया जटिल और धीमी है।
4. प्रशिक्षण केंद्रों की अनुपलब्धता: ग्रामीण स्तर पर कौशल विकास सीमित है।
5. लॉजिस्टिक और ट्रांसपोर्ट की कमी: दूरदराज के क्षेत्रों से बाजार तक पहुँच कठिन।
6. डिजिटल साक्षरता का अभाव: महिलाएँ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग नहीं कर पा रहीं।
7. संस्थागत समन्वय की कमी: सरकारी एजेंसियों और NGOs के बीच तालमेल कमजोर।
8. निगरानी व्यवस्था का अभाव: समूहों की प्रगति का मूल्यांकन नियमित रूप से नहीं हो पाता।

विश्लेषण: SHG की सफलता बाजार, प्रशिक्षण और वित्तीय सहयोग पर निर्भर है। यदि इन क्षेत्रों में सरकारी हस्तक्षेप बढ़ाया जाए तो SHG की उत्पादकता और स्थायित्व दोनों में सुधार हो सकता है।

9. झारखंड सरकार हेतु नीतिगत सुझाव

1. प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण केंद्र: प्रत्येक प्रखंड में *"महिला आजीविका प्रशिक्षण केंद्र"* स्थापित किया जाए।
2. "झारखंड रूरल ब्रांड" योजना: SHG उत्पादों को राज्य-स्तरीय ब्रांड पहचान दी जाए।
3. डिजिटल विपणन प्लेटफॉर्म: "JharBazaar" नामक ई-पोर्टल विकसित कर SHG उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री की व्यवस्था हो।
4. माइक्रो क्रेडिट सुविधा सरल करना: बैंकों द्वारा बिना जमानत लघु ऋण उपलब्ध कराया जाए।
5. सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ: SHG महिलाओं को बीमा और पेंशन योजनाओं से जोड़ा जाए।
6. NGO– सरकार साझेदारी: NGOs को प्रशिक्षण व विपणन सहयोग हेतु शामिल किया जाए।
7. मासिक मॉनिटरिंग सेल: SHG के कार्यों की प्रगति का मूल्यांकन करने हेतु जिला-स्तरीय समिति गठित हो।
8. स्थानीय उत्पादों का निर्यात संवर्धन: राज्य सरकार "एक जिला–एक उत्पाद" नीति के तहत SHG उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़े।

विश्लेषण:

इन नीतियों से SHG केवल घरेलू उद्योग नहीं बल्कि राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के इंजन के रूप में कार्य कर सकते हैं।

10. निष्कर्ष

रामगढ़ जिले के SHG समूहों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की दिशा में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इनसे महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, पूंजी निर्माण की प्रक्रिया तेज हुई, और सामाजिक सशक्तिकरण को नई दिशा मिली।

ग्रामीण विकास के लिए SHG अब नीति-निर्माण का अभिन्न अंग बन चुके हैं। यदि राज्य सरकार प्रशिक्षण, विपणन और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक ध्यान दे तो "आत्मनिर्भर झारखंड" का सपना साकार हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. NABARD. (2023). *Status of Microfinance in India 2022–23.* www.nabard.org
2. Ministry of Rural Development. (2023). *Annual Report on DAY-NRLM.* Government of India. www.rural.nic.in
3. Jharkhand State Livelihood Promotion Society (JSLPS). (2023). *Annual Report 2022–23.* www.jslps.in
4. Government of Jharkhand. (2023). *Jharkhand Economic Survey 2022–23.* www.jharkhand.gov.in
5. Verma, Seema (2018). *Role of SHG in Empowering Rural Women.* Indian Journal of Rural Development, 55(4).
6. Singh, Rakesh (2022). *SHGs and Rural Capital Formation in Jharkhand.* Economic Affairs, 67(2).
7. Kaushal, Amrita (2021). *SHG and Women Leadership in Rural India.* Social Change Journal, 13(3).
8. Jha, Reena (2021). *Financial Inclusion through SHGs in Eastern India.* Indian Social Science Review.
9. Mishra, Sonali (2023). *SHGs and Rural Entrepreneurship in Jharkhand.* Journal of Economic Development Studies, 12(2).
10. Kumar, Sanjay (2019). *Impact of SHGs on Income and Employment in India.* Indian Economic Review, 58(1).